द्वयणुक — दो परमाणुओं का प्रथम संयोग द्वयणुक कहलाता है।

त्र्यणुक या त्रसरेणु — तीन द्वयणुकों का संयोग त्र्यणुक कहलाता है।

→ परमाणु चार प्रकार के हैं: —

पार्थिव — गन्ध, रस, रूप और स्पर्श गुण

जलीय — रस, रूप और स्पर्श गुण

तैजस — रूप और स्पर्श गुण

वायवीय — स्पर्श गुण

प्रलय → सर्वप्रथम चारों परमाणु 'द्वयणुकों' में परिवर्तित हो जाते हैं और फिर उन द्वयणुकों से सृष्टि रचना होती है।

→ वैशेषिक परमाणुवाद जड़वाद या भौतिकवाद नहीं है अपितु आध्यात्मिक बहुवाद है क्योंकि वैशेषिक को जड़ परमाणुओं के साथ उनसे स्वतंत्र आत्मद्रव्यों की सत्ता भी स्वीकार है तथा वैशेषिक कर्मवाद को अदृष्ट को, ईश्वर को, एवं सृष्टि में अन्तर्निहित नैतिक नियम को भी मानता है।

* न्याय वैशेषिक दर्शन में तीन कारण बताये गए हैं:—

(i) समवायी (उपादान) कारण eg — सूत (कपड़े का)

(ii) असमवायी (कार्य) कारण eg — सूतों का रंग

(iii) निमित्त कारण — यह न तो कार्य का उपादान कारण होता है, न उपादान का आकार होता है, फिर भी कार्य की उत्पत्ति के कारण आवश्यक होता है। eg — 'कपड़ा' (जो तन्तुओं के संयोग में सहायक होता है) वस्त्र का निमित्त कारण है।

प्रयोजक कारण — eg — जुलाहा (कपड़ा बुनने वाला) वस्त्र का प्रयोजक कारण है (जो उपादानादि कारणों को उपस्थित करके कार्य का निर्माण करता है)

Notes: (i) समवायी / उपादान कारण — उस द्रव्य को कहते हैं जिसके द्वारा कार्य का निर्माण होता है। eg — मिट्टी से घड़े का निर्माण होता है। घड़े के लिये मिट्टी समवायी कारण है।

(ii) असमवायी कारण — वे क्रियाएँ हैं जिसके द्वारा कार्य का निर्माण होता है।

(iii) निमित्त कारण — उन कारणों को कहते हैं जो विभिन्न प्रकार की क्रियाओं से कार्य को सम्पन्न करता है।
eg — कुम्हार

* अदृष्ट:

सामान्यतः अदृष्ट का तात्पर्य है जो दिखाई न दे, परन्तु वैशेषिक दर्शन में अदृष्ट विभिन्न प्रकार की गतियों का कारण है। वैशेषिक दर्शन में अदृष्ट को ईश्वर की सहायक शक्ति माना गया है, जो ईश्वर की इच्छा से परमाणुओं में गति उत्पन्न करती है।

अदृष्ट को जीवात्मा के विशिष्ट शरीर का तथा उसके सुख-दुःखों का हेतु भी कहा गया है। यह हमारे पाप तथा पुण्य की शक्ति है जो व्यक्तिगत आत्मा में निवास करती है। जीव के जन्म-स्थान, समय एवं परिस्थितियाँ, परिवार तथा माता-पिता ये सब अदृष्ट के द्वारा ही निश्चित होते हैं।

* निःश्रेयस:-

वैशेषिक दर्शन में निःश्रेयस शब्द का प्रयोग मोक्ष के लिए हुआ है। वैशेषिक दर्शन का लक्ष्य भी अन्य दर्शनों की भांति मोक्ष को प्राप्त करना ही है। वैशेषिक दर्शन में धर्म का लक्षण है -

"यतो अभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः सधर्मः"

अर्थात् - जिससे अभ्युदय एवं निःश्रेयस की प्राप्ति हो वह धर्म है।

अभ्युदय से तात्पर्य सांसारिक उन्नति से है। सांसारिक उन्नति शास्त्रों द्वारा बताए कर्मों का पालन करने से होती है। यह निःश्रेयस से भी सम्बद्ध है। निःश्रेयस ही मोक्ष है। वेद भी दोनों की प्राप्ति का उपदेश देते हैं। अतः वेद प्रमाणित हैं।

* ईश्वर

→ कणाद-सूत्रों में ईश्वर का स्पष्ट उल्लेख नहीं हुआ है।

तद्वचन → वैशेषिक-सूत्र में 'तद्वचन' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसे कुछ विद्वानों ने - 'ईश्वरवचन' कुछ 'ऋषिवचन' भी माना है।

→ वैशेषिक के अनुसार वेद ईश्वर वाक्य है। ईश्वर नित्य, सर्वज्ञ है।

→ ईश्वर अचेतन अदृष्ट का संचालक है तथा जगत का निमित्त कारण है। तथा परमाणु उपादान कारण है।